मांगलिक योग एवं मंगली दोष

डॉ. रामदेव साहू
प्रोफेसर (वेदविज्ञान)
विश्वगुरु दीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

स्थान विशेष के साथ मंगल का योग होने से मांगलिक योग बनता है। इस विषय में सामान्य नियम यह है, कि जन्म लग्न में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में मंगल की स्थिति हो तो जातक को मांगलिक योग होता है। जिस भाव में मंगल होता है, वह भाव मंगली कहा जाता है, चाहे वह कोई सा भी भाव हो। इसके लिए प्रथम चतुर्थ सप्तम अष्टम द्वादश भाव ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि जिस भाव में भी मंगल होता है उस भाव पर उसका पूर्ण अधिकार होता है। लग्न की प्रधानता होने से लग्न में स्थित मंगल सर्वाधिक बली होता है तथा सप्तम भाव पर उसकी पूर्ण दृष्टि होने से दाम्पत्य को विखंडित करता है। अत: दाम्पत्य की श्रेष्ठता हेतु लग्नस्थ मंगल की शान्ति अनिवार्य है। द्वितीय भाव में मंगल स्थित हो, तो मांगलिक योग भले ही न हो किन्तु उस के मंगली होने से जातक को अधिक प्रभावित करता है, अत: इस मंगल की श्रेष्ठता - आश्रेष्ठता का विचार करना चाहिए। यदि शुभ ग्रह के प्रभाव में हो तथा शुभ स्थान का स्वामी हो, तो द्वितीय भाव में मंगल श्रेष्ठ फल देगा किन्तु यदि अशुभ ग्रह के प्रभाव में होगा या अशुभ स्थान का स्वामी होगा तो अशुभ फल देगा। भाव के मंगली होने से स्थिति फल प्रभावी होता है तथा अशुभ फलदायी होने पर गतिफल प्रभावी होता है। अतः स्थिति-फल का विचार जन्मलग्न से तथा गतिफल का विचार चन्द्रलग्न एवं गोचर से करना चाहिए)

यदि तृतीय भाव में मंगल की स्थिति हो तो भी भले ही मांगलिक - योग न हो, किन्तु भाव के मंगली होने के कारण उस जातक को अवश्य ही प्रभावित करता है। यह मंगल शुभ प्रभाव में होने पर कम अशुभ प्रभाव करता है किन्तु शुभ प्रभाव कभी नहीं करता। शुभ भाव का स्वामी होने पर भी अशुम प्रभाव करता है तथा अशुभ भाव का स्वामी होने पर तो और भी अधिक अशुभ प्रभाव करता है, अत: तृतीय भाव का मंगल भी विशेष विचारणीय होता है। इसका स्थितिफल एवं गतिफल यदि दोनों अशुभ हो, तो इसकी भी शान्ति करना अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि तृतीय भाव कुटुम्बभाव है अतः इसका प्रभाव संपूर्ण कुटुम्बूपर होता है। यदि चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति हो तो मांगलिक योग

होता है। दाम्पत्य के विषय में इस मंगल का विचार किया जाता है। सप्तम भाव चतुर्थ से चतुर्थ होता है, अत: उक्त स्थिति में स्थिति एवं गति दोनों का प्रभाव एक समान होता है, जो उक्त मंगल के शुभत्व एवं अशुभत्व के आधार पर जाना जा सकता है। यदि मंगल अत्यधिक अशुभ प्रभाव में हो तब ही इस मंगल को दाम्पत्य में बाधक माना जा सकता है, अन्यथा नहीं। दशम भाव पर इसके शुभत्वाशुभत्व का प्रभाव अधिक होता है किन्तु वह दाम्पत्यविषयक नहीं होता।

यदि पंचम भाव में मंगल स्थित हो तो मांगलिक योग नहीं होता, किन्तु भाव के मंगली होने के कारण मंगली दोष होता है। अत: वह मंगल भी उक्त भाव को पूर्णतया प्रभावित करता है। शुभभाव का स्वामी होने पर भी इसके स्थितिफल एवं दृष्टिफल कभी भी शुभ नहीं होते। सन्तान एवं आय दोनों को प्रभावित करने के कारण इस मंगल की भले ही शान्ति न करायें, किन्तु अन्य उपाय कर लेने चाहिए। शुभभावों का स्वामी होने पर पञ्चमभावस्थ मंगल की महादशा श्रेष्ठ फलदायिनी होती है, किन्तु अशुभ भाव का स्वामी होने पर अत्यन्त कष्टकारिणी होती है।

यदि छठे भाव में मंगल स्थित हो, तो भी जातक को मांगलिक योग नहीं बनता, किन्तु छठा भाव मंगली होने से मंगलदोष तो होगा ही। यह मंगल भी इस भाव को पूर्णतया प्रभावित करता है। शुभग्रह के प्रभाव में होने पर इस मंगल का स्थिति प्रभाव शुभ होता है, किन्तु अशुभ ग्रह के प्रभाव में होने पर स्थिति एवं गति दोनों प्रभाव अशुभ हो जाते हैं। छठे भाव के मंगल का दुष्प्रभाव सामान्यतया जातक को नहीं ग्रसित करता, किन्तु ननिहाल पक्ष को कष्टकारक होता है। इसकी शान्ति अनिवार्य नहीं है, किन्तु दुष्प्रभाव की स्थिति में अन्य उपाय किये जा सकते हैं।

यदि सप्तम भाव में मंगल स्थित हो तो जातक का मांगलिक योग बनता है। सतम भाव के दाम्पत्य भाव होने से दाम्पत्य के विषय में यह मंगल विचारणीय है। शुभ प्रभाव में होने पर भी यह मंगल शुभ फल नहीं देता तथा अशुभ प्रभाव में होने पर अत्यधिक अशुभ फल देता है अतः ऐसे मंगल की भी शान्ति अनिवार्य रूप से करा लेनी चाहिए। इस मंगल का स्थितिफल पति अथवा पत्नी का विनाश है। गतिफल शारीरिक कष्ट है। इतना अवश्य है कि शुभभावों का स्वामी होने पर इसकी महादशा श्रेष्ठफलदायिनी होगी।

यदि अष्टम भाव में मंगल स्थित हो तो भी जातक को मांगलिक योग बनता है। अष्टम भाव का मंगाली जातक के आयुष्य को प्रभावित करता है। यह अशुभ भाव का स्वामी होनेपर शुभफल देता है, किन्तु शुभ भाव का स्वामी होने पर अशुभ फल देता है। अत: इसका शुभत्वाशुभत्व विचारणीय है, किन्तु इसका दाम्पत्य पर प्रभाव नहीं पड़ता हो, यदि मंगल सप्तमेश होकर अष्टम में स्थित हो तो दाम्पत्य का विनाश करता है। उक्त स्थिति में ऐसे मंगल की शान्ति कराना

अनिवार्य है। अष्टमस्थ मंगल चाहे कितना ही शुभ प्रभाव में हो, किन्तु इसकी महादशा सदैव अत्यन्त कष्टकारक होती है।

यदि नवम भाव में मंगल स्थित हो, तो मांगलिक योग नहीं होता है, किन्तु भाव के मंगली होने के कारण मंगली दोष होता है, क्योंकि इस मंगल का भी प्रभाव अपने भाव पर पूर्ण रहता है। यह मंगल शुभ प्रभाव में हो तो शुभ फल देता है तथा अशुभ ग्रह के प्रभाव में हो तो अशुभ फल देता है, अतएव इसका भी विचार करना आवश्यक है। नवम भाव भाग्य से सम्बन्धित है, अत: यदि मंगल अशुभफलदायी होतो उसकी भी शांति करा लेनी चाहिए। यदि शुभफलदायी हो तो भी स्थितिदोष के निवारण का उपाय करना आवश्यक है, अन्यथा भाग्य बार बार बाधित होता रहेगा। शुभ भावों का स्वामी होने पर मंगल की महादशा कष्टकारक नहीं होती। यदि दशम भाव में मंगल स्थित हो, तो भी जातक को मांगलिक योग बनता है।

दशम भाव का मंगल सामान्यतया शुभकारक माना गया है तथापि सप्तम से सप्तम लग्न को इससे चतुर्थ होने के कारण दाम्पत्य के विषय में भी इसका विचार करते हैं तथापि शुभ ग्रह से प्रभावित होने पर तथा शुभ भाव का स्वामी होने पर इसका दाम्पत्य के विषय में विचार करना आवश्यक नहीं है। यह मंगल माता पिता को प्रभावित करता है। जातक को उतना प्रभावित नहीं करता। इसके लिए शान्ति अथवा उपाय आवश्यक नहीं माने जाते। हाँ यदि माता-पिता पर कोई विशिष्ट दुष्प्रभाव इससे हो रहा हो, तो उपाय किये जा सकते हैं।

यदि एकादश भाव में मंगल स्थित हो, तो जातक को मांगलिक योग नहीं बनता, किन्तु भाव के मंगली होने से मंगली दोष होता है। इस मंगल का भी पूर्ण प्रभाव अपने भाव पर ही होता है। यह मंगल शुभ प्रभाव में होने पर भी अपने अशुभत्व को नहीं छोड़ता, क्योंकि यह स्थान षष्ठ से षष्ठ होने के कारण अशुभ स्थान ही है। अतः यदि अशुभ प्रभाव में होता है, तो और भी अधिक अशुभ फल देता है। इसके अत्यधिक अशुभ होने की स्थिति में शांति कराना चाहिए क्योंकि यह स्थान आय का है। सामान्य स्थिति में अन्य उपाय किये जा सकते हैं।

यदि द्वादश भाव मे मंगल स्थित हो तो भी जातक को मांगलिक योग बनता है। पंचम स्थान से अष्टम होने के कारण इस स्थान का मंगल स्त्री की अपेक्षा संतान पर अधिक दुष्प्रभाव करता है, किन्तु सन्तान एवं कुल का आधार स्त्री ही है, अत: दाम्पत्य के विषय में इसका विचार किया जाता है, तथापि शुभ प्रभाव में हो तो दोष - निवारण की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसका स्थितिदोष नहीं होता, केवल गतिदोष ही होता है।